॥ श्रीशिवाष्टकम् २ ॥

.. shivAShTakam ..

sanskritdocuments.org

July 26, 2016

Document Information

Text title : shivaaShTakam
File name : shivaaShTakam.itx
Category : aShTaka
Location : doc_shiva
Author : Traditional
Language : Sanskrit
Subject : philosophy/hinduism/religion
Transliterated by : Ravin Bhalekar ravibhalekar at hotmail.com
Proofread by : Ravin Bhalekar ravibhalekar at hotmail.com
Latest update : September 25, 2004
Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com
Site access : http://sanskritdocuments.org

॥ श्रीशिवाष्टकम् २ ॥

श्रीगणेशाय नमः ।
प्रभुमीशमनीशमशेषगुणं गुणहीनमहीश-गलाभरणम् ।
रण-निर्जित-दुर्ज्जयदैत्यपुरं प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ॥ १॥

गिरिराज सुतान्वित-वाम तनुं तनु-निन्दित-राजित-कोटीविधुम् ।
विधि-विष्णु-शिवस्तुत-पादयुगं प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ॥ २॥

शशिलाञ्छित-रञ्जित-सन्मुकुटं कटिलम्बित-सुन्दर-कृत्तिपटम् ।
सुरशैवलिनी-कृत-पूतजटं प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ॥ ३॥

नयनत्रय-भूषित-चारुमुखं मुखपद्म-पराजित-कोटिविधुम् ।
विधु-खण्ड-विमण्डित-भालतटं प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ॥ ४॥

वृषराज-निकेतनमादिगुरुं गरलाशनमाजि विषाणधरम् ।
प्रमथाधिप-सेवक-रञ्जनकं प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ॥ ५॥

मकरध्वज-मत्तमतङ्गहरं करिचर्म्मगनाग-विबोधकरम् ।
वरदाभय-शूलविषाण-धरं प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ॥ ६॥

जगदुद्भव-पालन-नाशकरं कृपयैव पुनस्त्रय रूपधरम् ।
प्रिय मानव-साधुजनैकगतिं प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ॥ ७॥

न दत्तन्तु पुष्पं सदा पाप चित्तैः पुनर्जन्म दुःखात् परित्राहि शम्भो ।
भजतोऽखिल दुःख समूह हरं प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ॥ ८॥

॥ इति शिवाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

Encoded and proofread by Ravin Bhalekar ravibhalekar@hotmail.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of any website or individuals or for commercial purpose without permission.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

.. shivAShTakam ..
was typeset on July 26, 2016

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*